MAKHANLAL CHATURVEDI NATIONAL UNIVERSITY OF JOURNALISM AND COMMUNICATION

// UNIVERSITY LIBRARY //

-: NEWS CLIPPING SERVICE -:

DATE:10 DECEMBER 2025

एमसीयू में एआई पर कॉन्फ्रेंस में दूसरे दिन पढ़े 200 शोध पत्र

भोपाल। माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के विज्ञापन और जनसंपर्क विभाग द्वारा दो दिवसीय मेगा इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। विज्ञापन और जनसंपर्क के साथ दुनिया में आश्चर्यजनक बदलाव और आधुनिकता की बयार को लेकर बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने शोध पढ़े। प्रतिभागियों में देश-विदेश के करीब 200 विशेषज्ञ, शिक्षाविद्, पैनी पैठ के चिंतक, रिसर्च स्कॉलर्स और विद्यार्थी शामिल हुए और नए विषयों, नए मुद्दों और प्रभावशाली प्रस्तुतियों से ध्यान आकर्षित किया। दो दिवसीय आयोजन में 16 सत्र हुए। संगोष्ठी में विशेषज्ञ जार्ज मैसन यूनिवर्सिटी अमेरिका से डॉ. सर्गेई सैमोइलैंको, काठमांडू विश्वविद्यालय नेपाल से प्रो. डॉ. निर्मलमणि रहे।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'PEOPALS SAMACHAR'10 DECEMBER.2025

एमसीयू में एआइ पर दो दिवसीय इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस संपन्न

एआइ ने विज्ञापन और जनसंपर्क की दुनिया में किये रोचक बदलाव

पत्रिका plus रिपोर्टर
patrika.com

भोपाल. एआई हमारी दुनिया को पल-प्रतिपल बदल रहा है खासकर विज्ञापन और जनसंपर्क के क्षेत्र में आए बदलाव चकित कर देने वाले हैं...इसी को केंद्र में रखते हुए माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के विज्ञापन और जनसंपर्क विभाग द्वारा एक इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। इस कॉन्फ्रेंस में देश और विदेश के 200 से अधिक शोध छात्र, शिक्षक, विशेषज्ञ और विद्वानों ने ऑनलाइन-ऑफलाइन अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) से विज्ञापन और जनसंपर्क के साथ जीवनशैली में आए परिवर्तन संबंधी नई जानकारी, चिंता, चुनौती, और संभावना को व्यक्त किया।

सोच समझकर करें प्रयोग : एआई विशेषज्ञ जयप्रकाश पाराशर ने उद्घाटन सत्र में बताया कि जीवन के हर क्षेत्र में एआई अब हमारी जरुरत है, मगर सोच समझकर इसका प्रयोग करना होगा। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि एआई पर कोई भी आयोजन इवेंट तक सीमित न हो बल्कि पाठ्यक्रम में इसे पूरी ताकत से शामिल करना होगा। कुलसचिव प्रो. पी शशिकला भी इस अवसर पर मौजूद रहीं। विभागाध्यक्ष डॉ. पवित्र श्रीवास्तव ने बताया कि अमेरिका, बहरीन, बुल्गारिया, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका और दुबई आदि देशों के शोधकर्ताओं ने भी शोध प्रत्र प्रस्तुत किये।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'PATRIKA'10 DECEMBER.2025

एमसीयू में एआई पर इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस के दूसरे दिन प्रतिभागियों ने पढ़े रोचक शोध पत्र

एआई ने विज्ञापन की दुनिया को दिलचस्प बना दिया है, खतरे पर भी रखना होगी नजर

स्वदेश ज्योति संवाददाता,भोपाल

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के विज्ञापन और जनसंपर्क विभाग द्वारा दो दिवसीय मेगा इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस 8 और 9 दिसंबर को सफलतापूर्वक संपन्न हुई। विज्ञापन और जनसंपर्क के साथ हमारी पूरी दुनिया मे हो रहे आश्चर्यजनक बदलाव और आधुनिकता की बयार को लेकर बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने शोध पढ़े।

200 से ज्यादा शोध पत्र पढ़े गए

इन प्रतिभागियो मे देश-विदेश के तकरीबन 200 विशेषज्ञ, शिक्षाविद,पैनी पैठ के चिंतक, रिसर्च स्कॉलर्स और विद्यार्थी शामिल हुए और सभी ने नए विषयों,नए मुद्दो और प्रभावशाली प्रस्तुतियों से ध्यान आकर्षित किया। दो दिवसीय आयोजन को 16 सत्रो में विभाजित किया गया और ऑनलाइन-ऑफलाइन समानांतर सत्रों के साथ सभी को धैर्यपूर्वक सुना गया। विश्वविद्यालय के अतिथि व्याख्याता व नियमित प्राध्यापको के साथ छात्रों ने भी इस आयोजन मे बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। इस कॉन्फ्रेंस में देश के विविध शासकीय अशासकीय विश्वविद्यालयों के प्राध्यापको ने भी एक मंच पर आकर कॉन्फ्रेंस की गरिमा बढ़ाई। अधिकांश शोधार्थियों ने सकारात्मक सोच और एप्रोच के साथ अपने पेपर प्रेजेंट किए। फैशन, वैंक,कुंभ मेला,ट्रेफिक मैनेजमेंट,डिजिटल स्टोरी टेलिंग,एआई निर्मित एनिमेशन फिल्म से लेकर स्मार्ट स्टोरी टेलिंग,ग्रीन मार्केटिंग और ओटीटी पर फिल्म प्रचार में एआई की भूमिका जैसे आकर्षक विषयो के साथ शोध पढ़े गए। वहीं कुछ प्रतिभागियों ने एआई के संभावित खतरों पर भी चिंता व्यक्त की और भविष्य की चुनौतियों से निपटने के समाधान भी बताए। जनसंपर्क और विज्ञापन की दुनिया के बदलते रंगों पर भी रोशनी डाली गई और नित नए स्वरूप में आ रहे अल्गोरिदम पर भी नजर रखी गई। कहीं किसी सत्र में सवाल उठा कि कहीं एआई ने भाषा के साथ खेलते हुए खुद की कोई भाषा बना ली तो क्या होगा? कहीं इस बात पर चिंतन हुआ कि एआई मानव व्यवहार का अध्ययन करे वहाँ तक तो ठीक है पर मानवीय व्यवहार को अपने ही तरीके से प्रभावित न करने लग जाए। किसी प्रतिभागी की चिंता थी कि अगर एआई हमारा भविष्य है तो क्यों आज भी लोग उस पर भरोसा नहीं कर रहे है? वहीं यह प्रश्न भी आया कि जनसंपर्क अभियान को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए एआई का बेहतर इस्तेमाल कैसे कर सकते है?

एआई ने शब्द और दृश्य दोनों को ताकत दी है लेकिन सावधान भी रहना होगा

ऑनलाइन सत्र मे प्रो .मनीष वर्मा(स्कूल ऑफ क्रिएटिव आर्ट्स,बहरीन पॉलिटेविनक, बहरीन) ने बताया कि एआई किस तरह से मीडिया एनवॉयरमेंट को हमारी सोच से कहीं ज्यादा सुंदर और सरल आकार दे रहा है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2030 तक हमारा विजन क्या होगा और बदलते परिदृश्य मे किन खास स्किल्स की जरुरत होगी . एआई ने शब्द और दृश्य दोनों को ताकत दी है पर हमें सतर्क भी रहना होगा कि यह ताकत हम पर उलट कर हावी न हो जाए। उन्होंने प्रतिभागियों को कई आवश्यक नए मॉर्डन टूल्स की जानकारी भी दी। विशेषज्ञ के रूप मे शामिल डॉ . सर्गेई सैमोइलैंको(जार्ज मैसन यूनिवर्सिटी, अमेरिका),प्रो .डॉ . निर्मलमणि अधिकारी,(काठमांडू विश्वविद्यालय,नेपाल) और श्री विनोद नागर(संस्थापक,सीबीएमडी,एआई) के शोध पत्र सराहनीय रहे।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'SWADESH JYOTY'10 DECEMBER.2025

दलित युवा और ब्राह्मण बेटी के विवाह का मंचन

खोखले आदर्शों को निर्वस्त्र करता नाटक 'पुरुष'

विजय मनोहर तिवारी ■ भोपाल

कोर्ट के कूटरचित आदेश से प्रमोशन झपटने वाले, जेल की हवा खाकर लौटे विवादित प्रमोटी आईएएस संतोष कुमार वर्मा को रवींद्र भवन में मंचित जयवंत दलवी का नाटक 'पुरुष' एक बार अपनी अजाक्स की पूरी टीम के साथ बैठकर पूरे मन से देखना चाहिए। यह नाटक केवल दो जातियों के बीच रिश्ते की कहानी नहीं है, बल्कि यह हमारे समाज, राजनीति, आदर्शवाद और नैतिकता के बीच पड़ी खाइयों का आईना है। एक दलित युवा नेता और ब्राह्मण बेटी की शादी के सपने से शुरू होने वाली कहानी अंत में इस देश के जाति-दंश, राजनीतिक सौदों और खोखले आदर्शों को निर्वस्त्र कर देती है।

सोमवार को रवींद्र भवन में यह नाटक देखते हुए मुझे मध्यप्रदेश में अजाक्स के 'नेता' और प्रशासनिक अधिकारी संतोष वर्मा का वही ओजस्वी बयान याद आया जो उन्होंने एक सार्वजनिक मंच से दिया था। उन्होंने कहा था- ''आरक्षण तब तक रहना चाहिए जब तक कोई ब्राह्मण अपनी बेटी का कन्यादान उसके बेटे को नहीं कर देता या वह संबंध नहीं बना लेता।'' पर दलवी का यह नाटक बताता है कि सामाजिक न्याय का विमर्श सिर्फ नारों में नहीं, किरदारों के पतन में झलकता है।

नाटक का केंद्र है अण्णा आप्टे। एक गांधीवादी, अहिंसा के पुजारी, सत्य के साधक। उनकी बेटी अंबिका स्कूल में अध्यापक है और सिद्धार्थ नामक एक दलित युवा नेता से विवाह करने वाली है। घर में किसी प्रकार का पूर्वाग्रह नहीं। अण्णा ने बेटी को 'न्याय और बराबरी' की जो शिक्षा दी है, वही उसके जीवन की आधारशिला है।

लेकिन कथा में आता है एक निर्मम मोड़... एक स्थानीय बाहुबली नेता गुलाबराव अंबिका का रेप कर देता है। उसकी चीख

रोकने के लिए उसके मुँह में गांधी टोपी ठूँस दी जाती है। यह दृश्य सिर्फ नाटक का नहीं, उस आदर्शवाद के शव का दृश्य है जिसे हम कथों पर ढोते रहते हैं। घटना के बाद अण्णा की पत्नी आघात से आत्महत्या कर लेती है। अण्णा की अहिंसा की पूरी इमारत अचानक रेत साबित होती है।

पुलिस, कोर्ट, पार्टी सब गुलाबराव के साथ होते हैं। साक्ष्य के अभाव में वह बरी होने के बाद, चुनाव का टिकट लेकर आता है, सांसद बनता है और निर्लज्ज होकर अण्णा के घर आकर कहता है- ''जिसकी सत्ता होती है, उसकी जीत होती है।'' यह संवाद सिर्फ नाटक का नहीं, आज के लोकतंत्र की चीर-फाड़ करती हुई टिप्पणी है। आश्चर्य का दूसरा कड़वा अध्याय तब खुलता है जब दलित नेता सिद्धार्थ, अपनी ब्राह्मण प्रेमिका के साथ हुए रेप पर न आंदोलन करता है, न गुस्सा दिखाता है बल्कि राजनीतिक सौदेबाजी कर लेता है। एक संवाद है- 'आमरण अनशन करने वालों को पोंसने वाले 1947 में भारत छोड़ गए।' उसके लिए न्याय से अधिक महत्वपूर्ण है लोकसेवा आयोग के जरिये अफसर बनने की डील। एक झटके में दलित उत्पीड़न की राजनीति का चेहरा उजागर होता है, न्याय नहीं, आपदा चाहिए ताकि उसे अवसर में बदला सके।

अंबिका का जागरण न्याय और अन्याय के द्वंद्व पर होता है। वह समझती है कि भारत में अन्याय दो तरह का माना जाता है- एक जो दलित पर हो और तब प्रतिकार जरूरी माना जाता है। दूसरा जो किसी ब्राह्मण पर हो और तब वह 'राजनीतिक मुद्दा' नहीं रहता। यह संवाद आज भी हमारे समाज की नसों को चुभता है। दरअसल सिर्फ सरनेम से कोई ब्राह्मण नहीं होता; आचरण, ज्ञान, त्याग और तप से होता है। जैसे सिर्फ कलेक्टर का बेटा कलेक्टर नहीं बन जाता, वैसे ब्राह्मणत्व भी परीक्षा माँगता है। यह एक उजागर सच्चाई है कि आरक्षण ने जातियों की तरलता को ठोस ईंट में बदल दिया। एक आदमी जज, डूड, मंत्री, सांसद बनकर भी 'सदा-सदा के लिए दलित' ही रहता है और यही अवचेतन हीनग्रंथि संगठन की आड़ में सुरक्षा ढूँढती है। हम भूल जाते हैं कि भारत का सामाजिक संतुलन योग्यता और आचरण पर खड़ा था, न कि जातिगत लेबल पर। वाल्मीकि, रविदास, कबीर सब इसका प्रमाण हैं। बाबा साहेब अंबेडकर को भी किसी आरक्षण ने नहीं, उनकी असाधारण प्रतिभा ने मुकाम दिया।

भोपाल के कलाकारों का उत्कृष्ट प्रदर्शन

नाटक की आत्मा बने विवेक सावरीकर (अण्णा) और उनकी बेटी आसावरी (मधु)। नाटक का मराठी से हिन्दी में अनुवाद किया ज्योति सावरीकर ने। और इसके निर्देशक हैं विवेक सावरीकर के दामाद आदर्श शर्मा। इस तरह एक ही परिवार के चार कलाकार मंच पर और सभी अपनी-अपनी भूमिकाओं में गहरे उतरे। विशेष बात यह कि नब्बे के दशक में भी विवेक-ज्योति ने इसी नाटक में युवा पात्रों की भूमिकाएँ निभाई थीं। एक कला-परंपरा की ऐसी सतत धारा दुर्लभ है।

और अंत में

'पुरुष' महज नाटक नहीं हमारे लोकतंत्र का एक्स-रे है। यह बताता है कि सत्ता और न्याय की लड़ाई में आदर्श अक्सर सबसे पहले मरते हैं। और यह भी कि जाति के नाम पर, न्याय के नाम पर, आरक्षण के नाम पर सबसे ज्यादा सौदे वही करते हैं जो सबसे ज्यादा पीड़ित होने का दावा करते हैं।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'SWADESH'10 DECEMBER.2025